



MPC के हालिया नरिणयः रेपो, मुद्रास्फीतऱनुमान, आई-सीआरआर

प्रलिमिऱस के लयिः

[मौद्रकि नीतऱसमतिऱ](#), [भारतीय रऱजिर्व बैंक](#), [हेडलाइन मुद्रास्फीतऱ](#), [वृद्धशील नकद आरकषति अनुपात \(I-CRR\)](#), [रविर्स रेपो ऑपरेशन](#), [मुद्रास्फीतऱ लकष्यीकरण](#), [खुला बाज़ार संचालन](#)

मेन्स के लयिः

भारत में अतरिकित तरलता के नहितार्थ, अतरिकित तरलता को कम करने के लयि RBI द्वारा अपनाए गए उपाय, उच्च मुद्रास्फीतऱ और उच्च तरलता को एक साथ प्रबंधति करने के तरीके

चर्चा में क्यौं?

[भारतीय रऱजिर्व बैंक](#) (Reserve Bank of India- RBI) की [मौद्रकि नीतऱसमतिऱ](#) (Monetary Policy Committee- MPC) ने हाल ही में चालू वतित वर्ष (2023-24) में खुदरा मुद्रास्फीतऱ के लयि अपने अनुमान को संशोधति करते हुए [नीतऱरेपो दर](#) को 6.5% पर बनाए रखने का वकिलप चुना है ।

- इसके अलावा अतरिकित तरलता को कम करने के लयि बैंकों के लयि [अस्थायी 10% वृद्धशील नकद आरकषति अनुपात \(I-CRR\)](#) बनाए रखना आवश्यक है ।

MPC के प्रमुख नरिणयः

- रेपो दर को अपरविरतति रखना: RBI ने आर्थकि वकिस और मुद्रास्फीतऱ नयित्रण को संतुलति करने के लयि नीतगित रेपो दर को 6.5% पर अपरविरतति रखने का सर्वसम्मतऱ से नरिणय लयि ।
- मुद्रास्फीतऱ का अनुमान बढ़ाना: चालू वतित वर्ष में खुदरा मुद्रास्फीतऱ का अनुमान 30 आधार अंक बढ़ाकर 5.4% कर दिया गया है ।
 - यह समायोजन सब्जयिों की बढ़ती कीमतों के कारण [हेडलाइन मुद्रास्फीतऱ](#) में बढ़ोतरी की प्रवृत्तऱ को स्वीकार करता है ।
 - जबकि सब्जयिों की कीमतों में बढ़ोतरी अस्थायी होने की अपेक्षा होती है, संभावति [अल नीनो](#) (El Nino) मौसम की स्थति तथा वैश्वकि खाद्य कीमतें जैसे [बाहरी कारक](#) संभावति जोखमि उत्पन्न करते हैं ।
- अनुमानति GDP वृद्धि: MPC ने वर्ष 2023-24 में वास्तवकि GDP वृद्धि के अपने अनुमान को 6.5% पर बनाए रखा है ।
- वृद्धशील नकद आरकषति अनुपात (I-CRR): 12 अगस्त, 2023 से प्रभावी, [अनुसूचति बैंकों](#) को 19 मई, 2023 तथा 28 जुलाई, 2023 के बीच अपनी मांग और समय देनदारयिों में शुद्ध वृद्धिपर 10% का I-CRR बनाए रखना आवश्यक है ।
 - इस कदम का उद्देश्य [अधशेष तरलता](#) को कम करना है, वशेष रूप से हाल ही में 2000 रुपए के नोटों के वमिद्रीकरण के कारण ।
 - RBI ने बैंकों को उनकी वर्तमान जमा राशऱ के लयि दंडति करने से रोकने तथा [क्रेडिट वृद्धि](#) और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव को सीमति करने के लयि [सामान्य CRR \(Cash Reserve Ratio\)](#) वृद्धि के बजाय I-CRR का वकिलप चुना ।
 - CRR वृद्धि से ऋण नधि सीमति हो जाएगी तथा उधार लेने की लागत बढ़ जाएगी । I-CRR नयिमति बैंकगि परचालन को बाधति कयि बनिा [वमिद्रीकरण](#) से अतरिकित तरलता को लकषति करता है ।
 - मौजूदा CRR 4.5% पर अपरविरतति है ।
 - साथ ही RBI ने स्पष्ट कयि की I-CRR एक अस्थायी उपाय है । वर्ष 2016 में वमिद्रीकरण के समय 100% I-CRR नयिोजति कयि गया था ।

HDFC लमिटिड-HDFC बैंक वलिय एवं RBI का हालयिा कदमः

- अनुमान: इस अतरिकित CRR को शुरू करने का RBI का नरिणय वलिय के बाद अनुग्रह अवधि के दौरान HDFC बैंक द्वारा प्राप्त कसिी भी संभावति लाभ की भरपाई करने का एक प्रयास हो सकता है ।
- पृष्ठभूमि: HDFC लमिटिड एक बैंक नहीं था, लेकनि यह जमा राशऱ ही एकतरति कर सकता था । हालाँकि यह CRR नयिम के अधीन नहीं था । इसके बाद HDFC लमिटिड का HDFC बैंक में वलिय हो गया, जसिसे बैंकगि प्रणाली में बड़ी मात्रा में जमा राशऱ आ गई ।

- वलिय के बाद HDFC बैंक को एक छूट अवधि दी गई थी, जिसके दौरान उसे अपनी नई जमा राशि पर सामान्य 4.5% CRR जमा नहीं करना था।
- इस अनुग्रह अवधि ने बैंक को संभावित रूप से इन महत्वपूर्ण जमाओं को कहीं और नविश करने के साथ ही इन नविशों से लाभ कमाने की अनुमति दी।
- RBI के वृद्धशील CRR के हालिया कदम का तात्पर्य है कि HDFC बैंक समेत बैंकों को इन जमाओं का अतिरिक्त 10% RBI के पास रखना होगा।

अतिरिक्त तरलता को कम करने हेतु RBI के अन्य उपाय:

- **रिवर्स रेपो परिचालन:** RBI [रिवर्स रेपो परिचालन](#) संचालित कर सकता है, जहाँ यह बैंकों को धन के बदले में सरकारी प्रतिभूतियों को प्रस्तुत करके अतिरिक्त तरलता को अवशोषित करता है।
 - हालाँकि हाल ही में RBI ने रिवर्स रेपो रेट बढ़ाने के बजाय I-CRR का उपयोग करने का विकल्प चुना क्योंकि रिवर्स रेपो रेट बढ़ाने से रेपो रेट भी बढ़ जाता जिससे कठोर [मौद्रिक नीति](#) की स्थिति के साथ ही आर्थिक सुधार में बाधा उत्पन्न होती है।
- **वदेशी मुद्रा परिचालन:** वदेशी मुद्रा भंडार बेचने से घरेलू मुद्रा बाजार में तरलता कम हो सकती है।
 - इस दृष्टिकोण का उपयोग सावधानी से किया जा सकता है, क्योंकि यह [वनिमिय दर](#) तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित कर सकता है।
- **नैतिक प्रेरणा:** RBI बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ संवाद करके उन्हें स्वेच्छा से अपनी तरलता की स्थिति का प्रबंधन करने और अत्यधिक उधार देने पर अंकुश लगाने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है।

नोट:

- **CRR:** नकद आरक्षण अनुपात, शुद्ध मांग और समय देनदारियों का एक प्रतिशत, बैंकों को तरलता को नियंत्रित करने के लिये केंद्रीय बैंक (RBI) के पास रखना चाहिये।
 - **वृद्धशील CRR:** अतिरिक्त तरलता का प्रबंधन एवं अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिये RBI द्वारा बैंकों की CRR अधिक करने आवश्यकता है।
- **रेपो दर:** यह वाणिज्यिक बैंकों हेतु अल्पकालिक ऋण के लिये RBI द्वारा निर्धारित ब्याज दर है। यह मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने एवं आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिये प्रयोग किया जाने वाला एक उपकरण है।
- **मुद्रास्फीति:** यह एक समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में निरंतर वृद्धि को संदर्भित करता है, जिससे रुपए की करय शक्ति में कमी आती है।
 - **हेडलाइन मुद्रास्फीति:** यह उस अवधि के लिये कुल मुद्रास्फीति है, जिसमें वस्तुओं की एक टोकरी शामिल होती है।
 - **खाद्य और ईंधन मुद्रास्फीति** भारत में हेडलाइन मुद्रास्फीति के घटकों में से एक है।
 - **कोर मुद्रास्फीति:** यह हेडलाइन मुद्रास्फीति पर नज़र रखने वाली वस्तुओं की टोकरी से अस्थिर वस्तुओं को बाहर करती है। इन अस्थिर वस्तुओं में मुख्य रूप से भोजन और पेय पदार्थ (सब्जियों सहित) तथा ईंधन एवं प्रकाश (कच्चा तेल) सम्मिलित है।
 - **कोर मुद्रास्फीति** = हेडलाइन मुद्रास्फीति - (खाद्य और ईंधन) मुद्रास्फीति
- **मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण:** यह एक मौद्रिक नीति ढाँचा है जिसका उद्देश्य मुद्रास्फीति के लिये एक विशिष्ट लक्ष्य सीमा बनाए रखना है।
 - **उरजित पटेल समिति (Urjit Patel Committee)** ने मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण के उपाय के रूप में थोक मूल्य सूचकांक (Wholesale Price Index) पर उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index) की सफ़ारिश की।
 - वर्तमान मुद्रास्फीति लक्ष्य भी 4% की लक्ष्य मुद्रास्फीति दर स्थापित करने की समिति की सफ़ारिश के साथ संरेखित है, जिसमें वचिलन की स्वीकार्य सीमा +/- 2% है।
 - केंद्र सरकार, RBI के परामर्श से खुदरा मुद्रास्फीति के लिये मुद्रास्फीति लक्ष्य तथा ऊपरी और नचिली छूट का स्तर निर्धारित करती है।
- **तरलता से तात्पर्य उस सुविधा से है जिसके साथ किसी परसिंपत्तिया सुरक्षा को उसकी कीमत पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाले बिना बाजार में जल्दी से खरीदा या बेचा जा सकता है।**
 - यह वित्तीय दायित्वों को पूरा करने या नविश के लिये नकदी या तरल संपत्तियों की उपलब्धता को दर्शाता है। सरल शब्दों में तरलता का अर्थ है जब भी आपको ज़रूरत हो अपना पैसा प्राप्त करना।

भारत में अतिरिक्त तरलता के प्रभाव:

- **सकारात्मक प्रभाव:**
 - **कम ब्याज दरें:** अतिरिक्त तरलता से अर्थव्यवस्था में ब्याज दरें कम हो सकती हैं।
 - जब धन की प्रचुरता होती है, तो बैंक तथा वित्तीय संस्थान उधारकर्ताओं को आकर्षित करने के लिये अपनी उधार दरें कम कर देते हैं।
 - यह उधार लेने और नविश गतिविधियों को प्रोत्साहित कर सकता है तथा आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकता है।
 - **नविश को प्रोत्साहित करना:** कम ब्याज दरों के साथ व्यवसायों को अपने परिचालन का विस्तार करने, नई परियोजनाएँ शुरू करने और नौकरियाँ प्रदान करने के लिये उधार लेना और नविश करना सस्ता पड़ सकता है।

• इसका आर्थिक गतिविधि और रोजगार सृजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

■ **नकारात्मक प्रभाव:**

- **मुद्रास्फीति का दबाव:** अतिरिक्त तरलता, अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के दबाव में योगदान कर सकती है।
 - जब वस्तुओं और सेवाओं की सीमति आपूर्ति के पीछे बहुत अधिक पैसा व्यय होता है, तो कीमतें बढ़ सकती हैं।
 - इससे **उपभोक्ताओं की करय शक्ति निषट हो सकती है** तथा उनके समग्र जीवन स्तर में कमी आ सकती है।
- **वनिमिय दर में अस्थिरता:** वदेशी पूंजी के अचानक प्रवाह से मुद्रा के मूल्य में वृद्धि हो सकती है, जिससे **नरियात अधिक महंगा हो जाएगा** तथा आयात सस्ता हो जाएगा।
 - **दूसरी ओर, बहरिप्रवाह से मुद्रा का अवमूल्यन हो सकता है, जो व्यापार संतुलन और बाहरी ऋण को प्रभावित कर सकता है।**
- **एसेट प्राइस बबल्स:** अतिरिक्त तरलता द्वारा परसिंपत्तकी कीमतों में वृद्धि होने से स्पेकुलेटिवि बबल्स (परसिंपत्तियों की कीमतों में तीव्र वृद्धि) की स्थिति भी हो सकती है।
 - परसिंपत्तियों की कीमतों में वृद्धि को बुनियादी सदिधांतों द्वारा समर्थित नहीं किये जाने के परिणामस्वरूप **कीमतों में अचानक गरिावट आ सकती है, जिससे वतितीय अस्थिरता पैदा हो सकती है।**
- इससे अर्थव्यवस्था में आय असमानता में वृद्धि हो सकती है।
 - **आय असमानता:** जनि अमीरों का परसिंपत्तियों में अधिक निवेश है, वे **अतिरिक्त तरलता के लाभों**, जैसे कि उच्च परसिंपत्तियों के मूल्यों से असंगत रूप से लाभ कमा सकते हैं।

उच्च मुद्रास्फीति और उच्च तरलता का एक साथ प्रबंधन:

- **ब्याज दर समायोजन:** RBI ब्याज दरों के समायोजन के लिये सत्रकतावादी दृष्टिकोण का सहारा ले सकता है।
 - उच्च तरलता ब्याज दरों को कम करने की मांग कर सकती है, लेकिन **मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाना भी आवश्यक है।**
 - तरलता और मुद्रास्फीति दोनों को प्रबंधित करने के लिये **वृद्धिशिल ब्याज दरों में बढ़ोतरी करना एक संतुलित मार्ग हो सकता है।**
- **ओपन मार्केट ऑपरेशंस:** RBI नरियंत्रित ओपन मार्केट ऑपरेशंस का भी उपयोग कर सकता है, इसके तहत **मौद्रिक व्यवस्था में निवेश हेतु तरलता को संतुलित करने के लिये सरकारी प्रतभूतियों की बिक्री की जाती है।**
 - इससे अति तरलता के मुद्रास्फीतिकारी प्रभावों को कम करने में मदद मलि सकती है।
- **लक्षति राजकोषीय उपाय:** भारत सरकार मुद्रास्फीति उत्पन्न करने वाले व्यवसायों से निपटने के लिये केंद्रति राजकोषीय रणनीतियों को लागू कर सकती है।
 - **उदाहरण के लिये** कृषि संबंधी बुनियादी ढाँचे और आपूर्ति शृंखला में सुधार हेतु निवेश से **खाद्य कीमतों को स्थिर करने** में मदद मलि सकती है, यह भारत में मुद्रास्फीति का वर्तमान प्रमुख कारक है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2020)

1. खाद्य वस्तुओं का 'उपभोक्ता मूल्य सूचकांक' (CPI) भार (Wegitage) उनके 'थोक मूल्य सूचकांक' (WPI) में दयि गए भार से अधिक है।
2. WPI, सेवाओं के मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को नहीं पकड़ता, जैसा कि CPI करता है।
3. भारतीय रज़िर्व बैंक ने अब मुद्रास्फीति के मुख्य मान तथा प्रमुख नीतगित दरों के निर्धारण हेतु WPI को अपना लयि है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

प्रश्न. यद भारतीय रज़िर्व बैंक प्रसारवादी मौद्रिक नीति का अनुसरण करने का नरिणय लेता है, तो वह नमिनलखिति में से क्या नहीं करेगा? (2020)

1. वैधानिक तरलता अनुपात को घटाकर उसे अनुकूलति करना।
2. सीमांत स्थायी सुवधि दर को बढ़ाना।
3. बैंक दर को घटाना तथा रेपो दर को भी घटाना।

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. क्या आप इस मत से सहमत हैं कि सिकल घरेलू उत्पाद की स्थायी संवृद्धि तथा नमिन मुद्रास्फीति के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था अच्छी स्थिति में है? अपने तर्कों के समर्थन में कारण दीजिये। (2019)

स्रोत: द हिंदू

PDF Reference URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/mpc-recent-decisions-repo,-inflation-projection,-i-crr>

